(परमपिता+परमात्मा शिव और उनके दिव्य कर्तव्य):-

जब सारी ही आत्माएँ आत्म-लोक से इस सृष्टि पर उतरने को होती हैं, तब अन्त काल से कुछ ही पहले परमपिता+परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आते हैं और आकर इस सृष्टि रूपी रंगमंच की जो हीरो-हीरोइन पार्टधारी आत्माएँ हैं, कोई तो होंगी, अच्छे-बुरे पार्टधारी तो होते ही हैं। तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कोई तो सबसे ज़्यादा श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले होंगे। उनको अंग्रेजों में कहा जाता है- **'एडम और ईव'**, मुसलमानों में कहा जाता है- **'आदम और हव्वा'** और हिन्दुओं में कहा जाता है- **''त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः। त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।''(गीता 11/38)** वे सृष्टि के आदि हैं। उनकी शुरुआत किसी ने नहीं बताई कि वे आदिशक्ति+आदिदेव कब से हैं, उन्हें जन्म देने वाला कौन है, किसी को पता ही नहीं है। हिन्दू परम्परा में उनको 'आदिदेव', मुसलमानों में 'आदम', क्रिश्चियनों में 'एडम' और जैनियों में 'आदिनाथ' कहा जाता है। देखिए आप, शब्दों में कितना साम्य है।

पहले दुनिया में एक ही धर्म था और एकता थी। वह एकता तभी आ सकती है, **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की असली भावना तभी हो सकती है जबकि सारी दुनिया एक ही युगल को अपना मात -पिता मान ले। तो वे परमपिता+परमात्मा शिवबाबा आते हैं, आकर इस सृष्टि रूपी रंगमंच की हीरो-हीरोइन पार्टधारी आत्माओं (राम-कृष्ण) को उठाते हैं। वे 84 के चक्र के आखिरी जन्म में राम-कृष्ण के रूप में नहीं होते; क्योंकि 16 कला संपूर्ण कृष्ण/नारायण का राज्य तो सतयुग में था, राम का राज्य त्रेता में था। वही आत्माएँ जन्म-मरण के चक्र में नीचे कलियुग तक उतरते-2, हमारे-आपके रूप में कहीं-न-कहीं नर रूप में होती हैं। उन नर रूपों में परमपिता+परमात्मा शिव प्रवेश करते हैं, जैसे गीता में एक शब्द आया है- **'प्रवेष्टुम्'(गीता 11/54)**, मैं प्रवेश

करने योग्य हूँ। कौन? वे सुप्रीम सोल शिव, जो जन्म-मरण के चक्र से न्यारे हैं। वे प्रवेश करके कृष्ण उर्फ़ दादा लेखराज के द्वारा पहले माँ का पार्ट बजाते हैं, जिसका नाम अपनी भारतीय परम्परा में रखा जाता है चतुर्मुखी 'ब्रह्मा'। 'ब्रह्मं' माने बड़ी और 'माँ' माने माँ। दुनिया में सबसे जास्ती सहन करने वाली माँ होती है। परमपिता+परमात्मा भी इस सृष्टि पर आकर पहले माँ का पार्ट प्रत्यक्ष साकार देह में बजाते हैं, जिसके लिए अपनी भारतीय परम्परा में उनकी महिमा के गीत गाए हैं- **''त्वमेव माता च पिता त्वमेव...।''** वे इतना प्यार देते हैं, इतना प्यार देते हैं कि जो असुर हैं, वे उनसे वरदान लेने के आदी हो जाते हैं। माँ का स्वभाव ऐसा होता है कि कोढ़ी, काना, कुब्जा, चोर, डकैत, लुच्चा, लफंगा बच्चा होगा, उसको भी अपनी गोद से अलग नहीं करना चाहेगी। बाप कहेगा- 'हट! निकल बाहर'; लेकिन माँ गोद से अलग नहीं करेगी। ऐसे ही ब्रह्मा का साकार पार्ट इस सृष्टि-मंच पर पहले है।

परमपिता+परमात्मा शिव, ब्रह्मा में प्रवेश करके जो वाणी चलाते हैं, उस वाणी का नाम पड़ता है **'मुरली'**। मुरली नाम क्यों पड़ा ? आप और हम जानते हैं कि कृष्ण के हाथ में मुरली दिखाई जाती है। तो हमने समझ लिया कि कोई बाँस की मुरली होगी; लेकिन यह तो प्रतीकात्मक, लाक्षणिक और आलंकारिक कवियों की भाषा है, जो उन्होंने भागवत और महाभारत में लिखी हुई है। उसका वास्तविक अर्थ यह है कि परमपिता+परमात्मा ब्रह्मा के मुख से माने बच्चा बुद्धि कृष्ण की सोल के द्वारा पहले-2 इस सृष्टि पर आकर कलियुग-अंत में जो प्यार देते हैं, मीठी वाणी सुनाते हैं, वह वाणी इतनी अच्छी लगती है कि जब लोगों को सुनने-सुनाने में आ जाती है कि यह बात क्या है, तो उससे ज़्यादा बढ़कर मीठी और सुरीली तान सारी दुनियाँ में और किसी की नहीं लगती। इसलिए उसका नाम रखा गया मुरली (**'मधुर गीता'**)। गीता अथवा सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, जो भारत का सर्वोपरि ग्रंथ है **'सर्वशास्त्र शिरोमणि भगवत्-गीता'**, उसको मुरली कहा जाता है। तो परमपिता+परमात्मा आकर ब्रह्मा के तन से बाँस की मुरली द्वारा यह ज्ञान बंसी की मीठी तान सुनाते हैं। इस तरह माँ के रूप में वे ब्राह्मणों को जन्म देते हैं। शास्त्रों में लिखा हुआ है कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। तो हम समझते हैं कि कोई ऐसी कलाकारी मुँह में होगी, जो उन्होंने मुँह से 'हुआ' किया और ब्राह्मण निकल पड़े; लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता। यही पुरानी कलियुगी सृष्टि होती है। इसी पुरानी सृष्टि में परमपिता+परमात्मा आकर ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके बच्चा बुद्धि मनुष्यों द्वारा समझने योग्य बेसिक ज्ञान सुनाते हैं, उस ज्ञान को सुनकर जो अपने जीवन को बनाते हैं, सुधारते हैं, उन्हीं में ब्राह्मणों के संस्कार आ जाते हैं। इस प्रकार ब्राह्मणों की जो ब्रह्मा मुख से उत्पत्ति होती है, उनको **'ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी'** अर्थात् ब्राह्मण-ब्राह्मणी कहा जाता है। यह नई सृष्टि की शुरुआत की बात है, जो अभी 5000 वर्ष बाद फिर से पुनरावर्तन हो रही है।

माउंट आबू से इस कार्य की प्रत्यक्ष शुरुआत हुई। शिव गुप्त रूप में आते हैं, जैसे गीता (9/11) में कहा है- **'साधारण तन में आए हुए मुझ निराकार परमपिता+परमात्मा को दादा लेखराज ब्रह्मा जैसे मूढ़मति लोग पहचान नहीं पाते।'** आपको जो ब्रह्मा का रूप दिखाया, यह व्यक्तित्व प्रैक्टिकल में हो चुका है। माउंट आबू में इनके द्वारा परमपिता+परमात्मा शिव ने ऊँची-नीची कुरियों के ब्राह्मणों की स्थापना कराई थी। इनका वास्तविक नाम दादा लेखराज ही था। सिध -हैदराबाद के रहने वाले ये सिधी ब्राह्मण थे, जिनके द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। अभी तो देश-विदेश में ढेर सारे ब्रह्माकुमारी आश्रम खुले हुए हैं। 70-80 साल के अंदर इतनी ज़बरदस्त स्थापना करना सामान्य आत्मा के बस की बात तो नहीं है। परमपिता+परमात्मा शिव स्वयं ही कृष्ण की सोल उर्फ़ दादा लेखराज का नाम **'ब्रह्मा'** रखते हैं और उसके द्वारा जब ब्राह्मण धर्म की स्थापना करते हैं, तब ढेर सारे ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ तैयार हो जाते हैं। परमपिता+परमात्मा देखते हैं कि इन ब्राह्मण बच्चों में ही दो किस्म के बच्चे पैदा हो गए। रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद जैसे भी ब्राह्मण थे और अपने जीवन में गुरू वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसों ने भी ब्राह्मणत्व अपनाया था। गुरू वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसों की संख्या थोड़ी होती है और रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद जैसों की संख्या ढेर सारी हो जाती है। यही बात ब्रह्माकुमारी आश्रम में भी हुई। ब्रह्मा की गोद में रस लेने

से पैदा हुए जो कुखवंशावली ब्रह्मा वत्स हैं, उनमें ढेर सारे दुष्ट ब्राह्मण पैदा हो गए और जो ज्ञान -योग में ब्रह्ममुख से ज़्यादा रस लेने वाले त्यागी-तपस्वी हैं, वे थोड़े रह गए। अतः क्या होता है? परमपिता+परमात्मा को वह शरीर छोड़ देना पड़ता है। कृष्ण वाली सोल माना चतुर्मुखी ब्रह्मा की सोल को शरीर छोड़ सूक्ष्म शरीर धारण करना पड़ता है।

उसके बाद सन् 1969 में परमपिता+परमात्मा शिव, राम वाली सशक्त आत्मा में 50 वर्ष सर्वथा गुप्त प्रवेश करते हैं; क्योंकि माता का भी प्यार भरा पार्ट शि व का है, तो पिता का भी सख्त पार्ट उन्हीं का है। कहावत है- टेढ़ी उँगली किए बगैर घी नहीं निकलता। अब राम वाली सोल कहीं -न-कहीं तो इस सृष्टि पर होगी ना ? तो उस व्यक्तित्व में, जो कि 50 वर्ष पहले से ही ब्रह्माकुमार बनी हुई होती है, उसमें वे शिव ही प्रवेश करके अपना कार्य आरम्भ करते हैं। इस कार्य के आरम्भ होने के बाद, थोड़े समय के अन्दर ही ब्रह्माकुमारी संस्था में सन् 1976 से राम बाप के प्रत्यक्षता वर्ष के बाद स्पष्ट विभाजन नज़र आता है, जैसे सभी धर्मों में हुआ- जैसे **स्लाम और मुस्लिम**, बौद्धियों में **'हीनयान' (और) 'महायान'**, जैनियों में **'श्वेताम्बर और दिगम्बर'**, मुसलमानों में भी **'शिया और सुन्नी'**, क्रिश्चियन्स में **'रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट'**, दो-दो सम्प्रदाय हो गए। ये दूसरे-2 जो भी धर्म हैं, उन सबने उस परमपिता+परमात्मा को ही फॉलो किया।

अब जब परमपिता+परमात्मा ने आकर नए सनातन धर्म की स्थापना की, तो भी यही प्रक्रिया चली कि ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के कुछ समय के बाद उस ब्रह्माकुमारी आश्रम में दो तरह के लोग बी.के. और पी.बी.के स्पष्ट नज़र आते हैं तो आपस में टकराव पैदा होता है। बुद्धिजीवी ब्राह्मणों की संख्या कम होती जाती है और वे अलग हो जाते हैं तो संघर्ष तो बढ़ेगा ही। हर धर्म में यह संघर्ष का चर्मउत्कर्ष रूप पैदा होता है। गुरुओं का जो बड़ा और पुराना गद्दीनशीन रूढ़िवादी, दकियानूसी वर्ग है, वह सच्चाई को नहीं पहचानता; क्योंकि उनको तो पहले से ही समाज में गद्दी का नशा है। वह माउंट आबू में अभी भी काबिज़, अधिकार-प्राप्त है। वे सच्ची बात को सुनते भी नहीं हैं। आप देखेंगे कि जो कुछ भी ब्रह्मा द्वारा माउंट आबू से मुरली या वाणी सुनाई है , वह वाणी वास्तव में अपनी जगह पर शास्त्रसंगत है; लेकिन ब्रह्माकुमारियाँ आज भी यह बात कह रही हैं कि शास्त्र सब झूठे हैं और हमारे बाबा ने जो कुछ बोला है, वही सच्चा है; लेकिन बाबा ने जो कुछ बोला है, उसका अर्थ क्या है? वह उन्हें पता ही नहीं है और सुनने-सुनाने के लिए तैयार भी नहीं हैं। मानवीय हिस्ट्री के हर धर्म में यह स्थिति पैदा होती रही है। इसी तरीके से परमपिता+परमात्मा शिव राम वाली आत्मा (जो पुरुषोत्तम संगमयुग सहित त्रेतायुग में भी होती है), जो जन्म-मरण के चक्र में आते-2 कलियुग-अन्त में साधारण मानव तन में होती है, उसमें प्रवेश करके शंकर के नाम-रूप से संसार में धीरे-2 प्रत्यक्ष होना शुरू होती है। शंकर का सख्त पार्ट है। सख्त पार्ट के द्वारा वे ब्राह्मणों के सम्प्रदाय में दो फाड़े कर देते हैं - सच्चे मुखवंशावली ब्राह्मण और झूठे कम कुरियों वाले कुखवंशावली ब्राह्मण। मुखवंशावली वह जो ब्रह्मा के मुख से चलाई हुई मुरली की ही बात मानते हैं , किसी देहधारी की बात नहीं मानते और कुखवंशाव ली वह जो ब्रह्मा की कुख अर्थात् गोद के प्यार को विशेष महत्व देते हैं, मुख की चलाई हुई मुरली को महत्व नहीं देते। सूर्यवंशी कुरी में चुनी हुई कुछ ही श्रेष्ठ आत्माएँ निकलती हैं। आपने देखा होगा कि शंकर जी के सर पर, बाहों में माला दिखाते हैं। गले में भी कई तरह की मालाएँ पड़ी हुई हैं। माला संगठन की निशानी होती है। एक स्नेह और दूसरे ज्ञान के सूत्र में वे मणके रूपी आत्माएँ पिरोई गई हैं। उनका संगठन तैयार किया जाता है। ये माला रूपी संगठन सारे संसार में हर धर्म में मान्यता प्राप्त करते हैं। किस रूप में? आप देखेंगे, मुसलमानों में भी माला घुमाई जाती है, क्रिश्चियन्स में भी माला घुमाई जाती है, बौद्धी लोग भी माला घुमाते हैं, सिक्ख लोग भी माला घुमाते हैं। यह माला का इतना महत्व क्या है जो हर धर्म में घुमाई जाती है? यह कोई नहीं जानता। बाबा ने मुरली में बताया है कि **''बच्चे, ये माला के जड़ मणके तुम कलियुग में तामसी बने जड़जड़ीभूत आत्माओं की यादगार है।''** जब परमपिता+परमात्मा आते हैं तो तुम श्रेष्ठ आत्मा रूपी मणकों को सभी धर्मों में से इकट्ठा करते हैं और इन श्रेष्ठ आत्माओं का जो माला रूपी संगठन तैयार

होता है, वह महाविनाश में सारे संसार में तहलका/खलबली मचाता है। पहले भारतवर्ष में ब्रह्मावत्सों की दुनिया के अन्दर तहलका शुरू होता है।

माला के संगठन में 108 मणके होते हैं। आप देखेंगे, दुनिया में आज मुख्य-मुख्य 9 धर्म फैले हुए हैं। हिन्दू धर्म तो बहुत पुराना है। उसमें से दो फाड़े ऐसे हैं - जो एक तो आदि सनातनी कभी दूसरे धर्म में कनवर्ट नहीं होते और दूसरे ऐसे हैं कि जो हिन्दू नामधारी कनवर्ट होते ही रहे। मुसलमान आए तो मुसलमानों में कनवर्ट हो गए, क्रिश्चियन्स आए तो क्रिश्चियन्स में कनवर्ट हो गए, सिक्ख आए तो सिक्ख में कनवर्ट हो गए। तात्पर्य यह है कि सनातन धर्म में दो प्रकार के वर्ग हो गए- एक थोड़े से प्राय: लोप हुए नॉन कनवर्टेड, जो कभी कनवर्ट नहीं हुए। भले किसी भी तरह की कोई परीक्षा आई; परंतु अपने धर्म को नहीं छोड़ा। दूसरे वह, जो कनवर्ट होते ही रहे, एक से दूसरे धर्म में, दूसरे से तीसरे धर्म में, तीसरे से चौथे धर्म में। आज से 2500 वर्ष पहले **'इस्लाम धर्म'** आया, फिर चौथा **'बौद्ध धर्म'** आया, (जो) चीन, जापान, बरमा, मलाया में फैला। पाँचवाँ **'क्रिश्चियन धर्म'** आया, जो युरोपीय देशों में फैला, अमेरिका में फैल गया। छठा शंकराचार्य का **'संन्यास धर्म'** (लाल-पीले-काले-सफेद कपड़े पहनकर निकला)। उसके बाद मुहम्मद आए, जिन्होंने इस्लाम धर्म के दो फाड़े करके मूर्तिपूजा बंद करवा दी और **'मुस्लिम धर्म'** फैलाया। उसके बाद गुरूनानक आए और उन्होंने मुसलमानों से टक्कर लेने के लिए भारत के ही अच्छे-खासे, हट्टे-कट्टे कम बुद्धि वाले, जो सनातन धर्म के लोग थे, उनको कनवर्ट करके **'सिक्ख'** बना दिया और वे मुसलमानों अथवा क्रिश्चियन्स से ज़बर्दस्त टक्कर लेते रहे। कुल मिलाकर अन्त में **'आर्य समाज'** एक ऐसा धर्म आता है, जो सबको आहूत करता है कि तुम सब कनवर्टिड हुए हिन्दू आ करके भारतवर्ष में इकट्ठे हो जाओ, किसी भी धर्म का हो, हम उसे हिन्दू बना देंगे। पक्के हिन्दुओं ने तो कभी विधर्मियों को स्वीकार नहीं किया। इन आर्यसमाजियों ने अपने भारत देश में सब धर्मों का कनवर्टिड कचड़ा इकट्ठा कर लिया। एक धर्म ऐसा भी है **'नास्तिकवाद'**, जो माला में नम्बर ही नहीं पाता। ईश्वर की जो श्रेष्ठ आत्माओं वाली 8,108 या 16108 की मालाएँ नं. वार बनती हैं, उसमें उनका नम्बर नहीं लगता। वे ये हैं नास्तिक (रशियन्स)। वे न स्वर्ग मानते हैं , न नर्क मानते हैं; न आत्मा को मानते हैं, न परमात्मा को मानते हैं, वे कुछ नहीं मानते। वे अपने वैज्ञानिक नशे में आकर एटॉमिक एनर्जी तैयार करते हैं कि हम ही सब कुछ हैं। हम चाहेंगे तो दुनिया को नचाएँगे , नहीं तो नष्ट कर देंगे; लेकिन वे अपने मक्कड़ जाल में खुद ही फँस जाते हैं। आज तो रूस बिखर गया और उससे ज़्यादा एटॉमिक एनर्जी अमेरिका ने धारण कर ली है। इस तरीके से दुनिया के नं०वार 9 मुख्य आस्तिक धर्म हैं। इन 9 धर्मों की चुनी हुई मुख्य-2 बारह-2 (9 X 12 = 108) आत्माएँ परमपिता+परमात्मा इकट्ठी करते हैं। उस सुप्रीम गॉडफादर जगत्पिता द्वारा बनाए गए श्रेष्ठतम माला रूपी संगठन का 'श्री-श्री 108 जगदगुरु' टाइटिल मूत की पैदाइश, विकारी मनुष्य गुरुओं ने पापी कलियुग से धारण कर रखा है।

आज से 80 साल पहले भारतवर्ष में इतने भगवान नहीं थे। **आचार्य रजनीश** भी भगवान, **जय गुरुदेव** भी भगवान, **साँई बाबा** भगवान, **सतपालजी महाराज** भगवान, **चंद्रा स्वामीजी** भगवान- ये ढेर के ढेर भगवान 80 साल पहले थे ही नहीं। 80 साल के अंदर ही ये ढेर के ढेर भगवान पैदा हो गए। अब भगवान एक होगा या ढेर के ढेर होंगे? भगवान तो ज़रूर एक होगा; लेकिन हिसाब क्या है? जब इस सृष्टि पर परमधाम छोड़कर सच्चा सद्गुरु आता है तो उसकी भेंट में ढेर सारे नकली हीरे दुनिया के बाज़ार में तैयार हो जाते हैं। वे नकली हीरे चारों तरफ अपना पॉम्प एण्ड शो, शोर-शराबा फैला देते हैं। जबलपुर में **महेशयोगी** की एक बड़ी भारी बिल्डिग बननी थी। उसका बनाना बंद कर दिया गया। उसमें होना क्या? बस, वही स्वाहा-2। अब उससे कुछ होता थोड़े ही है। 2500 वर्ष से यह स्वाहा-2 होता चला आया। क्या इससे कोई दुनिया का परिवर्तन होना है? परिवर्तन कुछ भी नहीं होना है। वह एक बात तो सच्ची बता दी कि वातावरण शुद्ध होता है ; परन्तु बजाय वातावरण शुद्ध होने के, दुनिया और ज़्यादा बिगड़ रही है। (एक भाई ने कहा - अमेरिका से वे गोल्ड का स्मगलिग करते हैं)। चलो, वह कुछ भी हो, हमने एक बात बताई कि भगवान ढेर के ढेर हैं; लेकिन नकली हीरे हैं और

उनमें पता नहीं चल रहा है कि असली कौन है ? ज़रूर असली भी है; लेकिन पता नहीं चल रहा है और उसका प्रूफ यह है कि भगवान जब आएँगे तो नई सृष्टि की स्थापना के साथ-2, पुरानी सृष्टि का विनाश का सामान भी तैयार कराएँगे। सत् धर्म की स्थापना के साथ-2 ढेर के ढेर जो झूठे धर्म फैले हुए हैं, उनका भी विनाश का कार्य बेहद का परमपिता ही करते-कराते हैं। **''विनाशाय च दुष्कृताम्।'' (गीता 4/8)** गीता का यह श्लोक भी बताता है। परमपिता+परमात्मा जब इस सृष्टि पर आते हैं तो यह तैयारी पहले कराते हैं। स्थापना गुप्त करते हैं और विनाश का कार्य योरोपवासी यादवों द्वारा कराते हैं।

रूस और अमेरिका, जिनको अपनी भारतीय परम्परा में महाभारत में यादव कहा गया है, बड़े-2 धनाढ्य होते थे, बहुत शराब पीते थे और ऊँची-2 बिल्डिगें होती थीं। ऐसे जो यादव ग्रुप हैं, उन्होंने क्या किया ? वे थे तो यदुवंशी भगवान कृष्ण के कंट्रोल में; लेकिन उन्होंने क्या किया ? उनके बुद्धि रूपी पेट से जो मूसल रूपी मिसाइल्स निकले, उन लोहे के मूसलों से उन्होंने आपस में लड़कर अपने सारे कुल का संहार कर दिया और सारी सृष्टि का भी चतुर्थ विश्वयुद्ध में विनाश कर दिया। लोगों ने स्थूल मूसल समझ लिए। अब यह तो समझने -2 की विडम्बना है। वास्तव में है मिसाइल्स की बात। जैसे पेट में कोई चीज़ पचाई जाती है, ऐसे यह बुद्धि रूपी पेट है। कहते हैं ना- **'तुम्हारे पेट में बात नहीं पचती।'** तो क्या यह (स्थूल) पेट है या यह (बुद्धि रूपी) पेट है? इस बुद्धि रूपी पेट में से वे मिसाइल्स निकले। उन लोहे के मूसलों से यह सारी दुनिया नष्ट होती है। 80 -82 साल के अंदर भारी तादाद में यह एनर्जी भी तैयार हो गई, सृष्टि पर परमपिता+परमात्मा का अवतरण भी हुआ और उसी समय से सारे भारतवर्ष में महात्मा गाँधी के टाइम पर सबसे ज़्यादा संगठित आवाज़ लगाई गई थी, **'हे पतित-पावन! सीता-राम आओ'** वह आवाज़ भी लग रही थी। भारत की 40 करोड़ जनता गाँधीजी के तत्वावधान में **'रघुपति राघव राजाराम, पतित-पावन सीताराम!'** की आवाज़ लगा रही थी; लेकिन आवाज़ लगाने वालों को यह पता नहीं चला कि परमपिता+परमात्मा इस सृष्टि पर उस समय से ही आ चुके हैं।

कहने का मतलब यह है कि जब परमपिता+परमात्मा आते हैं तो एक तरफ शंकर की मूर्ति द्वारा विनाश की बाजी भी तैयार कर देते हैं और दूसरी तरफ संगठित चतुर्मुखी ब्रह्मा द्वारा स्थापना का कार्य भी ब्रह्मावत्सों द्वारा पहले गुप्त में चलाते हैं। तो इस समय ये दोनों कार्य सम्पन्न हो रहे हैं - स्थापना का कार्य भी पूरा होता है और एटॉमिक एनर्जी भी तैयार हो जाती है, जिसका प्रथम विस्फोट हीरोशिमा-नागासाकी में हुआ। तब जा करके इस सृष्टि का एक तरफ महाविनाश होता है और दूसरी त रफ वह श्रेष्ठ आत्माओं की माला तैयार हो जाती है, जो सारी सृष्टि की धर्मसत्ता और राज्य-सत्ता की बागडोर धीरे-2 अपने हाथों में ले लेती है। आपने ज्योतिषियों की कुछ भविष्यवाणियाँ सुनी होंगी, जो अक्सर करके निकलती रहती हैं। 400-500 साल पहले के जो ज्योतिषी हुए हैं- कीरो, कीथ और नास्त्रेदमस आदि, इनकी भविष्यवाणियाँ निकली हुई हैं। सभी ने सन् 2000 को मुद्दा बनाया; लेकिन सन् 2000 के आस-पास का जो भी मुद्दा था, वह सारी सृष्टि के विनाश का मुद्दा नहीं था। वह वास्तव में सिर्फ़ ब्रह्मावत्सों की दुनिया के अन्दर सृष्टिवृक्ष की जड़ों रूप आधारमूर्त एवं बीजरूप आत्माओं की दुनिया के विनाश का मुद्दा है। यह कोई नहीं जानता। यह दुनिया एकदम ऐसे चुटकी में ख़त्म हो जाएगी तो परमपिता+परमात्मा को कौन पहचानेगा? परमपिता+परमात्मा को पहचानने के लिए और-2 धर्मपिताओं की ही तरह 100 वर्ष का टाइम तो चाहिए ना!

वास्तव में, यह जो सन् 2000 साल के बाद का पीरियड है, यह ब्रह्माकुमारी आश्रम में पॉम्प के द्वारा आमूल-चूल परिवर्तन ला देगा। बाहर की दुनिया में भी थोड़ा -2 परिवर्तन होगा, एटॉमिक एनर्जी का भी थोड़ा-2 विस्फोट होगा; लेकिन इतना नहीं होगा कि सारी सृष्टि ख़त्म हो जाए। अभी सिर्फ़ ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया का विनाश होता है, नई दुनिया की स्थापना होती है और सब अणुरूप आत्माएँ पहले बुद्धियोग से वापस परमधाम में जाती हैं। ब्राह्मणों की दुनिया के अन्दर जो विशेष आत्माएँ हैं, वे इस बात को समझ लेती हैं कि परमपिता+परमात्मा का साकार रूप और कार्यकाल क्या है और यह कार्य कैसे चल रहा है। यहाँ दिखाया गया है

कि जैसे हम आत्माएँ ज्योतिर्बिन्दु हैं, वैसे परमपिता+परमात्मा भी ज्योतिर्बिन्दु हैं। ज्योतिर्बिन्दु का ही बड़ा आकार शिवलिग बनाया जाता है, जिसे अपनी भारतीय परम्परा में 12 ज्योतिर्लिंगम् के नाम से प्रसिद्ध किया गया है। **उज्जैन, काशी, रामेश्वरम्, केदारनाथ, बद्रीनाथ...,** ये 12 ज्योतिर्लिंगम् बने हैं। 12 ही क्यों, 13 क्यों नहीं? 11 या 10 क्यों नहीं? 9 धर्मों से चुनी हुई 12-12 आत्माओं के 9 ग्रुप्स होते हैं। हर धर्म में श्रेष्ठ आत्माएँ तो होती हैं ना! परमपिता+परमात्मा भी जब आते हैं तो सर्वप्रथम हर आस्तिक धर्म से श्रेष्ठ-2, 12-12 आत्माओं को चुनते हैं और चुनकर उनको पक्का सूर्यवंशी ब्राह्मण बनाते हैं।

आज की दुनिया में वास्तव में कोई ब्राह्मण नहीं रहा। आप यह क्या कहते हैं ? आप तो ब्राह्मणों की अवहेलना करते हैं। नहीं, तुलसीदास ने यह बात रामायण में आज से 400-500 वर्ष पहले लिखकर छोड़ी है- **'भये वर्ण संकर सबै'**, सारे ही वर्ण संकर हो गए, कोई ब्राह्मण और कोई शूद्र नहीं रहा। उन्होंने 400 साल पहले लिखा था, अब तो हालत बहुत खराब हो गई। अब तो बहुत ज़्यादा व्यभिचार फैल गया। घर-2 में व्यभिचार फैला हुआ है। तो इस समय परमपिता+परमात्मा आकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा असली ब्राह्मण कुल की स्थापना कर रहे हैं। आपने सुना होगा, ब्राह्मणों की 9 कुरियाँ गाई जाती हैं- शांडिल्य गोत्र, भारद्वाज गोत्र, कश्यप गोत्र आदि-2। 9 ऋषियों के आधार पर 9 गोत्र गाए जाते हैं। वे 9 ऋषि कोई दूसरे नहीं हैं, 9 धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाली 9 श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, जो परमपिता+परमात्मा इस सृष्टि से असली ब्राह्मण धर्म में चुनते हैं। जो 9 आत्माएँ हैं, उनमें से एक सबसे श्रेष्ठ होगा ना? जो सबसे श्रेष्ठ हुआ, उसका जो 12 का ग्रुप है, वह परमपिता+परमात्मा शिव से इतना तादात्म्य स्थापित करता है कि उनकी शिव जैसी ही नं. वार निराकारी-स्टेज बन जाती है। इसलिए तो 12 ज्योतिर्लिंगम् आज भी भारतवर्ष में भगवान के रूप में पूजे जाते हैं।

कहने का मतलब यह हुआ कि परमपिता+परमात्मा शिव भी ज्योतिर्बिंदु हैं। ऋषियों-महर्षियों ने पूजा के लिए उनका बड़ा आकार बना दिया है। वह निराकारी स्टेज का प्रतीक है। निराकार का मतलब यह है कि उस स्टेज में जो 12 हैं, उनमें से एक **शंकर** का रूप, जिसे **'रुद्र अवतार'** कहा जाता है, वे ऐसी निराकारी स्टेज में रहते हैं कि जैसे कि उनका शरीर रूपी वस्त्र है ही नहीं। नं०वार इस स्टेज में रहना , अपने को सदैव आत्मिक स्टेज में समझना, दूसरों को आत्मा के रूप में देखना- ऐसी प्रैक्टिस पक्की हो जाए, उसको कहेंगे **'निराकारी स्टेज'**। इंद्रियाँ जैसे होते हुए भी नहीं हैं। जैसे कहते हैं- 'देखते हुए भी नहीं देखना, सुनते हुए नहीं सुनना'। जैसे दुनिया में कितनी भी ग्लानि उड़ रही है, उनके ऊपर कोई असर नहीं पड़ रहा है।